IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, January 2024

पुस्तकालय में कम्प्यूटर की उपयोगिता : छात्र और संदर्भ सेवा के संदर्भ में

डॉ. राजकुमार कुशवाहा[1] एंव डॉ. जेंदलाल सिंह[2]
पुस्तकालयध्यक्ष एवं विभागाध्यक्ष
शासकीय महाविद्यालय, रामपुर नैकिन, सीधी, म.प्र[1]
शासकीय महाविद्यालय, सिहावल, सीधी, म.प्र.[2]

सारांश :–

आज पुस्तकालय जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी अहम भूमिका अदा करते हुए सूचना क्रान्ति का प्रमुख केन्द्र हो चुका है। बदलते हुए समय के साथ जहाँ पुस्तकालय का विस्तार हुआ है, वहीं अनेक कई चुनौतियां का भी सामना इसे करना पड़ रहा है। अतः आवश्यक है कि समय की आवश्यकता और मांग के अनुसार इस क्षेत्र में नवीनतम शोध और अन्वेषण किये जाय। पुस्तकालय में प्रदान की जाने वाली सेवाओं में संदर्भ सेवा का महत्वपूर्ण स्थान है। बदलते हुए परिवेश में पुस्तकालय के सन्दर्भ में संदर्भ सेवा आवश्यक है। पुस्तकालय के संदर्भ में पाठक और पुस्तक में सम्पर्क स्थापित करने हेतु की जाने वाली सेवा ही संदर्भ सेवा है। सन्दर्भ सेवा वास्तव में व्यक्तिगत सेवा द्वारा पाठक और पुस्तक दोनों में सम्पर्क स्थापित करने की प्रक्रिया हैं। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि संदर्भ सेवा प्रत्येक पाठक को प्रश्नों के हल ढूढने के लिए सहायक ग्रन्थ ढूँढ़ने में दी गई व्यक्तिगत सेवा है। इस दृष्टि से आवश्यक है कि यह सेवा पूर्णतः और तत्परता के साथ दी जाये।

जब तब पाठक को इन प्रविधियों का ज्ञान नहीं होगा तब तक वह सही ढंग से पुस्तकालय का उपयोग करने में सक्षम नहीं होगा। इसे चलाने के लिए अनेक प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है। स्पष्ट है कि बिना तकनीकी जानकारी के अर्थात सन्दर्भ सेवा की कोई भी पुस्तकालय वांछित उद्देश्य की प्राप्ति नहीं कर सकता। जहॉ पूर्व में केवल पुस्तकालय पुस्तकों का संग्रह और उनकी सुरक्षा पर ही विशेष बल दिया जाता था वहॉ 19वीं शताब्दी से बदलते हुए परिवेश व आवश्यकता को ध्यान में रख कर संग्रहित ग्रंथों का व उनकी उपयोगिता पर विशेष बल दिया जाने लगा। इसलिए पुस्तकालय का अधिक से अधिक उपयोग हो सके इसलिए पुस्तकालय विज्ञान के न केवल अनेक सिद्धान्तों का विकास हुआ वरन् इसके अनेक विधियॉ लागू की गई है। यह सर्व विदित है कि वर्तमान का पाठक पुस्तकालयों से केवल पुस्तक या अन्य साहित्य ही नहीं चाहता बल्कि वह यह भी चाहता है कि उसकी समस्या का समाधान किस पुस्तक के अवलोकन से शीघ्र प्राप्त हो सकता है। इसलिए उसकी विशेष रूचि इस बात में है कि पुस्तकालय में उपलब्ध समस्त साधन और आधुनिक प्रविधियों का लाभ उसे मिल सके।

प्रस्तावना :–

भारत में पुस्तकालय शिक्षा ने 108 वर्ष पूरे कर लिये हैं। इन वर्षो में पुस्तकालय के सामाजिक परिवेश उसकी उपादेयता और पुस्ताकलयी व्यवस्था और प्रक्रिया में निरन्तर द्रुति गति से विकास व क्रान्तिकारी परिवर्तन हो रहा है। जहॉ कमी पुस्तकालय मात्र कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकालय और पत्रिकाओं का मात्र केन्द्र होता था वहॉ आज पुस्तकालय जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी अहम भूमिका अदा करते हुए सूचनाक्रान्ति का प्रमुख केन्द्र हो चुका है। बदलते हुए समय के साथ जहॉ पुस्तकालय का विस्तार हुआ है। वहीं अनेक नई चुनौतियों का भी सामना इसे करना पड़ रहा है। अतः आवश्यक है कि समय की आवश्यकता और मांग के अनुसार इस क्षेत्र में नवीनतम शोध और अन्वेषण किए जाये। पुस्तकालय में प्रयोग होने वाले मानव संसाधन में आधुनिक तकनीकी के साथ काम करने के लिए समुचित प्रशिक्षण, परिचर्चा, परिसंवाद एवं गहन अध्ययन व मानव की विशेष आवश्यकता

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, January 2024

है। मीडिया के विस्फोट से पुस्तकालय को सुसज्जित करना और उसका समुचित प्रयोग अपेक्षित सुधार व गुणात्मक विकास के लिए अनिवार्य है। इस महाविद्यालय में आयोजित शीर्षक पर आयोजित सेमीनार इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा। ऐसा करके ही पुस्तकालय और उससे जुड़े मानव संसाधन को हम आधुनिक तकनीक के साथ सक्षम बना सकते हैं पुस्तकालय को बेहतर यांत्रिकी कार्यक्षमता का विकास कर अध्येयता की परिवर्तित आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकते है। यहॉ यह स्पष्ट करने की आवश्यकता है कि उक्त क्रान्तिकारी परिवर्तनों के साथ एक आदर्श पाठ्यक्रम विकसित करना अनिवार्य है। विद्यालय से विश्वविद्यालय और अन्य तकनीकी शिक्षण संस्थाओं में संचालित पुस्तकालय में अनेक परिवर्तन किए गए हैं तथापि उन्हें हम पूर्ण नहीं कह सकते।

इस सन्दर्भ में सन्दर्भ सेवा को जानेगें कि पुस्तकालय शिक्षा में इसका क्या महत्व है। संदर्भ शब्द संस्कृत धातु 'दृभ' (बॉधना या बुनना) में 'सम्' उपसर्ग लगाकर बना है। संस्कृत कोश के अनुसार इसका अर्थ है एक साथ बॉधने वाला, संयोजित करने वाला, मिलाने वाला, बुनने वाला। इन सब अर्थो का मूल तत्व है दो या अधिक वस्तुओं का संयोग। दो वस्तुओं के बीच सम्पर्क स्थापित करने के लिए प्रयुक्त सेवा या कार्य को अभिव्यक्त करने के लिए 'संदर्भ सेवा' शब्द का प्रयोग किया जाता है। पुस्तकालय के संदर्भ में दो वस्तु है–पाठक और पुस्तक। इन दोनें मं सम्पर्क स्थापित करने हेतु की जाने वाली सेवा 'संदर्भ सेवा' है। इसका परिणाम पुस्तक के विषय से पाठक को पूर्ण परिचित करना। मूलतत्व को ध्यान में रखते हुए डॉ. एस.आर. रंगनाथन ने पुस्तकालय विज्ञान की शाखा का नाम संदर्भ सेवा रखा।

परिभाषा :–

डॉ. रंगनाथन के अनुसार–व्यक्तिगत सेवा के माध्यम से उपयुक्त पाठक और उपयुक्त पुस्तक के बीच ठीक समय पर सम्पर्क स्थापित करना, संदर्भ सेवा है। डी.जी. फास्टे के अनुसार–''संदर्भ सेवा वास्तव में मानववाद का प्रयोगिक रूप है, क्योंकि इसका उद्देश्य पाठकों की ज्ञान प्राप्ति के द्वारा अधिक आनन्द प्राप्त कराने में किसी की विधि से सहायता करना है।''

उद्देश्य :–

1. पुस्तकालय में आने वाले पाठकों को उसकी आवश्यक सूचना एवं सामग्री प्रदान करना।
2. नवीन साहित्य की जानकारी उपलबध करना।
3. पाठक के समय की बचत करना।
4. कम समय में अधिकतम जानकारी प्रदान करना।

आवश्यकता :–

पुस्तकालय में संदर्भ सेवा की निम्नलिखित आवश्यकतायें हैं–

1. राष्ट्रीय समय की बचत करना।
2. पुस्तकों की कृत्रिमता।
3. पुस्तकालय सूची और वर्गीकृत व्यवस्थापन पद्धति की कृत्रिमता।
4. मनोवैज्ञानिक आवश्यकता।
5. नवीन सूचनाओं का विकेन्द्रीकरण करना।
6. वर्तमान में प्रकाशित साहित्य के बढ़ते प्रकाशनों को संगठित कर ज्ञान का विकेन्द्रीकरण करना।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, January 2024

कार्य :–

1. निरीक्षणात्मक कार्य, 2. सूचनात्मक कार्य, 3. मार्गदर्शनात्मक कार्य,
4. निर्देशनात्मक कार्य, 5. वाड्.मय सूची सम्बन्धी कार्य, 6. मूल्यांकन कार्य।

सिद्धान्त :–

संदर्भ सेवा के सिद्धान्त इस प्रकार हैं–

अनुदार सिद्धान्त :– इस सिद्धान्त के अनुसार पुस्तकालयाध्यक्ष का कार्य केवल पाठकों को व्यक्तिगत सहायता देना ही काफी है। पुस्तक में से सूचना खोजना पाठक का स्वयं का कार्य हें सन्दर्भ पुस्तकालयाध्यक्ष से यदि पाठक किसी प्रकार की सहायता चाहे तब ही उसे सहायता करनी चाहिए, स्वयं आगे बढ़कर सहायता नहीं करनी चाहिए।

1. **उदार सिद्धान्त :–** इस सिद्धान्त के अनुसार पाठकों की मॉग न किए जाने पर भी उसकी सहायता करनी चाहिए। पाठक की जितनी सहायता हो सके उसे अधिक से अधिक सहायता करनी चाहिए।
2. **माध्यमिक सिद्धान्त :–** इस सिद्धान्त के अनुसार संदर्भ पुस्तकालयाध्यक्ष द्वारा बीच का रास्ता अपनाना चाहिए। अर्थात जैसी परिस्थिति हो उसी के अनुसार पाठकों की सहायता करनी चाहिए।

यदि संदर्भ विभाग में कर्मचारियों की संख्या पर्याप्त हो तो पाठकों को सूचना खोजकर उत्तर भी दिया जा सकता हैं यदि स्थिति विपरीत हो तो मात्र पाठक को निर्देश देना ही काफी है।

संदर्भ सेवा के प्रकार :–

1.प्रस्तुत संदर्भ सेवा : वह सन्दर्भ बहुत ही कम समय, यदि सम्भव हो तो कुछ ही क्षणों में प्रदान किया जा सके, उस सन्दर्भ सेवा को प्रस्तुत सन्दर्भ सेवा कहा जाता है।

2. दीर्घकालीन संदर्भ सेवा : दीर्घकालीन संदर्भ सेवा से तात्पर्य इउस सेवा से हे जिसमें शोधकर्ताओं के लिए वांछित तथ्य अथवा सूचना के उपयोजन में ग्रन्थालय के कर्मचारियों को अधिक समय लगने और काफी खोजबीन करने की सम्भावना होती है। यद्यपि यह अनुसंधान विश्वविद्यालय एवं विशिष्ट ग्रनीालयों का विशिष्ट अंग है फिर भी सभी प्रकार के ग्रन्थालयों में इनका कुछ न कुछ अस्तित्व रहता ही है।

सन्दर्भ सेवा में इन्टरनेट की सेवा :–

इन्टरनेट के माध्यम से सन्दर्भ सेवा बहुत ही आसन हो जाती है। क्योंकि इसमें उपस्थित विभिन्न सूचना संसाधनों जैसे विश्वकोश, निर्देशिका, शब्दकोश, डेटाबेसों, ऑनलाइन ग्रन्थालय सूचियों, मानचित्रों, जीवनियों, पेटेन्ट, ऑनलाइन सूचना संसाधनों आदि के माध्यम से उपयोगकर्ताओं की दिन प्रतिदिन होने वाली सूचनाओं की मांग को पूरा किया जा सकता है। इन्टरनेट के माध्यम से उपयोगकर्ताओं को संदर्भ सेवा में लगने वाले समय को कम किया जा सकता है और उससे सम्बन्धित वांछित सूचना को शीघ्र अतिशीघ्र प्रदान किया जा सकता है। इन्टरनेट के माध्यम से न केवल उपयोगकर्ताओं को सन्दर्भ सेवा प्रदान की जाती है बल्कि संसाधन जो कि इन्टरनेट में उपलब्ध है उसको उससे सम्बन्धित जानकारी तुरन्त प्रदान की जाती है। आज तो डिजिटल सन्दर्भ सेवा का प्रचलन बढ़ रहा है। इन्टरनेट में उपस्थित विभिन्न वेबसाइट के माध्यम से सन्दर्भ सेवा प्रदान की जा रही है। ग्रन्थालयों में संदर्भ सेवा का महत्वपूर्ण स्थान है। जिसके माध्यम से ग्रन्थालय कर्मियों तथा उपयोगकर्ताओं के बीच एक सम्बन्ध स्थापित होता है। इन्टरनेट ने इस सम्बन्ध को बहुत ही मजबूत बनाने का कार्य किया है क्योंकि जब किसी व्यक्ति को

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, January 2024

उसके प्रश्नों से सम्बन्धित जानकारी प्रापत होती है तो वह सन्तुष्ट हो जाता है। और प्रसन्नता का अनुभव करता है जिससे एक दूसरे के बीच सम्बन्धों में घनिष्टता आती है और ग्रन्थालय सेवाओं का विकास होता है।

सन्दर्भ सेवा और छात्र :–

भारत में आज उच्च शिक्षा के लिए कम्प्यूनिकेशन सुविधाएं सूचना एवं कम्प्यूनिकेशन तकनीक का ज्ञान काफी सरल हो गया है। विश्वविद्यालयों में तकनीकी पाठ्यक्रम का विकास एक सुदृढ़ परम्परा को बढ़ावा दे रही है और यह सब सम्भव हो रहा है कम्प्यूटर के प्रयोग से। शोधार्थियों को विभिन्न प्रकार, के ज्ञान का संकलन करना, उसकी सत्यता एवं विश्वसनीयता उसकी प्रासंगिकता व उपयोगिता, वैधता इत्यादि को एक साथ संकलित कर साबित करने का माध्यम कम्प्यूटर है। अन्तर पुस्तकालयीन साझेदारी को सुदृढ़ बनाने व उच्च शिक्षा को गुणवत्तायुक्त कारक के रूप में सिद्ध करता है। दिशा निर्देशों को तय करता है व सफलता के ज्यादा करीब ले जाता है।

समय के साथ ग्रंथालयों का भी स्वरूप बदला है पहले, ग्रंथपाल का स्वरूप संग्रहालयनुमा हुआ करते थे। सारा ध्यान सामग्रियों के रख–रखाव पर ही दिया जाता। उसके उपयोग की अपेक्षा 'सुरक्षा' अधिक महत्वपूर्ण माना जाता था। परन्तु अब ''वैज्ञानिक युग''– है। हर क्षेत्र में विज्ञान का वर्चस्व फैला हुआ है। सूचना संचार की तेज विस्फोटक गति ने पुस्तकालयाध्यक्षों एवं सूचना वैज्ञानिकों के समक्ष इन्हें संग्रहीत करने की समस्या उत्पन्न कर दी है। इसलिए आधुनिक ग्रंथालयों ने भी अपना लक्ष्य ''संदर्भ सेवा'' के स्थान पर 'सूचना–सेवा' को निर्धारित किया तथा उन सभी प्रकार के सम्भावित प्रयास को प्राथमिकता दिया जिससे उपयोगकर्ता को अधिक से अधिक ज्ञान सामग्री कम से कम समय में उपलब्ध करा सकें ताकि उसकी ज्ञान पिपासा शांत हो और वह अपने लक्ष्य तक पहुँच सके।

कम्प्यूटर आधुनिक विज्ञान की अद्भुत देन है आज कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जहॉ कम्प्यूटर का उपयोग न होता हो। इसी कारण ग्रंथालयों में भी सदर्भ व सूचना सेवा प्रदान करने के लिए कम्प्यूटर का प्रयोग किया जाने लगा इसके द्वारा कोई भी काम ठीक उसी ढंग से सम्पादित किया जाता है, जैसा हम चाहते हैं। समय की बचत करने में यह सर्वाधिक सहायक सिद्ध होता है। आज ग्रन्थालयों में भी प्रत्येक कार्य कम्प्यूटर की सहायता से किया जा रहा है। अन्य की तरह यहॉ भी कम्प्यूटर की शिक्षा अनिवार्य हो चुकी है। सभी ग्रन्थालय अपने कर्मचारियों को कम्प्यूटर कला में प्रशिक्षित कर रहे हैं और इसे अनिवार्य सेवा के रूप में बड़ी तेजी से क्रियान्वित कर रहे हैं।

कम्प्यूटर की सहायता से ग्रन्थालयों में प्रतिपादित होने वाले दैनिक कार्य–अधिग्रहण नियंत्रण, पत्रिका (Serial) नियंत्रण, सूचीकरण परिचालन नियंत्रण (Circulation Control) एवं सांख्यिकी का मूल्यांकन आसानी से किया जा सकता है। इसके अलावा फाइलिंग टंकण, छंटनी एवं अन्य पुनरावृत्ति वाले कार्यो से छुटकारा पाने के लिए भी कम्प्यूटर आवश्यक और उपयोगी है। आज शोध और विकास संगठनों की संख्या में तीव्र बढ़ोत्तरी के कारण भी ग्रंथालय उपयोगकर्ताओं की संख्या में भी तेजी हुई है इसी समस्या के समाधान हेतु कम्प्यूटर का उपयोग ग्रन्थालयों के लिए अनिवार्य है।

वर्तमान समय में कोई भी ग्रन्थालय सम्पूर्ण साहित्य को संग्रहीत नहीं कर सकता ऐसी स्थिति में स्त्रोत साझेदारी प्रक्रिया (Resource Sharing) को अपनाकर, सेवा प्रदान की जाती है यह कार्य कम्प्यूटर द्वारा ही ज्यादा सरलता से हो सकता है।

विगत चार दशकों से पुस्तकालय सेवाओं की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए नेटवर्क की स्थापना को भारत में भी काफी प्रोत्साहन मिला है और फलस्वरूप (Inflibnet Information& Library Networking) की स्थापना हुई। इसके सहयोग से कम्प्यूटर से विस्तृत सेवाएं प्रदान करना प्रारंभ किया गया और (Lan, Wan) जैसी महत्वपूर्ण सुविधाएं प्रदान करना प्रारंभ किया गया। इसका स्पष्ट अर्थ है (Local Aria Network) एवं (Wide Area Network) इस प्रकार इन दोनों

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, January 2024

व्यवस्था की सहायता से 'डेटा संचारण' व्यवस्था एक कम्प्यूटर से दूसरे कम्प्यूटर, एक भवन से दूसरे भवन, एक ग्रंथालय से दूसरे ग्रंथालय और एक देश से दूसरे देश तक सूचनाओं का सफल हस्तांतरण सम्भव हो सका है।

आज सभी ग्रन्थालय (Inflibnet) के द्वारा अपनी सेवा प्रणाली के उन्नत बनाने की दिशा में प्रयासरत है। भारत सरकार भी इस ओर लगातार सहयोग कर रही है और आज देश भर में अलग–अलग संस्थान अपने कम्प्यूटर टर्मिनल्स स्थापित कर अपने उपयोगकर्ताओं को सुविधाएं प्रदान कर रहे हैं। इस प्रकार सैकड़ों केन्द्र स्थापित हो चुके हैं। (Inflibnet) जो कि विशेष तौर पर विशाल ग्रन्थालय नेटवर्क है इसने सभी बड़े छोटे ग्रन्थालयों, राष्ट्रीय स्तर के संस्थनों अनुसंधान केन्द्रों को एक साथ जोड़ने का कार्य किया है। इससे सूचना सेवा की क्षमता में वृद्धि हुई है और मितव्ययता व कार्यकुशलता में वृद्धि हुई है तथा पुस्तकालयों के आधुनिकीकरण व कम्प्यूटरीकरण ने संचार, तकनीक के युग में अपनी अलग पहचान बनाने में सफलता प्राप्त किया है। कुछ विश्वविद्यालय अपने ग्रन्थालयों के आधुनिकीकरण के प्रति गंभीर है और अपने कार्य–प्रणाली को कम्प्यूटरीकृत कर समयानुसार अपने शोधार्थियों को समुचित सूचना सेवा प्रदान कर रहे हैं समय के अनुरूप अपने कर्मचारियों को भी प्रशिक्षित कर कम्प्यूटर शिक्षा में प्रशिक्षण की व्यवस्था कर रहे हैं।

यदि एस.आर. रंगनाथन के सूत्र ''ग्रंथालय उपयोगार्थ है, की बात करें तो उसका अभिप्राय भी यही निकलता है कि श्री रंगनाथन भी यही मानते थे कि ग्रंथालय को हर युग में ऐसा होना चाहिये कि वह सबके उपयोग में आता रहे। आज जब हर क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हो रहे हैं तो भला पुस्तकालय विज्ञान या पुस्तकालय विभाग इससे अछूता कैसे रह सकता है। ज्ञान की गंगा जब बिल्कुल नई धारा में बह रही हो, हर विषय की नई तकनीक से शिक्षा दी जा रही हो ऐसे में पुस्तकालय विज्ञान के ''सूचनाविज्ञान' पक्ष पर भी ध्यान आकर्षित करने की आवश्यकता है कि आज पूरे भारतवर्ष में सभी शिक्षण संस्थानों में सेमिनार, वर्कशॉप एवं समारोह आयोजित कर विषय विशेषज्ञों द्वारा इस ओर, ध्यान आकृष्ट कराया जा रहा है। नये–नये वैज्ञानिक अनुसंधान के परिणामों से अवगत कराया जा रहा है। पुस्तकालय कर्मचारियों की तरह ही पुस्तकालय टीचर्स को भी प्रशिक्षित किया जा रहा है जो कि निश्चित ही सराहनीय है।

यह एक व्यापक राष्ट्रीय प्रयास है जो कि आज अपनी चरम सीमा पर है। बौद्धिक स्वतंत्रता के क्षेत्र में नवीन ज्ञान की खोज हेतु ग्रन्थालयीन प्रयासों को प्रोत्साहन व हर सम्भव सहायता की आवश्यकता है तभी हम 'स्वचलित ग्रन्थालय के युग में सफलतापूर्वक कदम रख सकेंगें।

निष्कर्ष :–

परामपरागत ग्रंथालयों से तूलना करने पर आज के ग्रंथालय पूर्ण रूप से परिवर्तित हो चुके है। सूचना प्रौद्योगिकी ने इनके रूप को पूर्णरूप से बदल दिया है आज ई–स्त्रोतों का चलन इन्टरनेट के कारण सरल तीव्र एवं सस्ता भी होता जा रहा है। ई–बुक्स को आज हम आसानी से उपयोग कर सकते है। आज सूचना को ई–स्वरूप के रूप में ग्रंथालयों में आसानी से संग्रहीत किया जा सकता है। बाजार में उपलब्ध सॉफटवेयरों के कारण ई–बुक्स को कोई भी आसानी से उपयोग कर सकता है। इन स्त्रोतों को आसानी से उपयोग करने के लिए पाठकों एवं ग्रंथालय कर्मचारियों को समय के साथ अद्यतन रहने की आवश्यकता है। यदि हम सूचना प्रौद्योगिकी से पूर्णरूप से परिचित है तो ई–बुक्स को हम आसानी से उपयोग करके शैक्षणिक गंथालयों का भरपूर उपयोग करके लाभान्वित हो सकते है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, January 2024

संदर्भ सूची

[1]. ई–बुक क्या है, eprakashak.com/what_is_ebook_html

[2]. त्रिवेदी डॉ. आर.एन. एवं शुक्ला, डी.पी. (2000) रिसर्च मैथ्डोलॉजी, कालेज बुक डिपों, जयपुर

[3]. मिश्रा, लक्ष्मी (1982), मध्यप्रदेश में शिक्षा, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल,

[4]. चतुर्वेदी, देवीदत्त (1995), पुस्तकालय और समाज, हिमालय प्रकाशन हाउस, आगरा

[5]. अब आया ई–पुस्तकों का जमाना, न्यूज इन हिन्दी 27 जनवरी,2009

[6]. www.mhrd.gov.in

[7]. www.ugc.ac.in (11th Plan)